

कबीर का परिचय

कबीर का जन्म 1398 ई. में वाराणसी में और मृत्यु मगहर में हुआ था। वे पढ़े-लिखे नहीं थे किंतु अपार ज्ञान और अनुभव के धनी थे। तत्कालीन समय में अंधविश्वास और धार्मिक आडंबर का बोलबाला था। समाज कठिन परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। कबीर ने इन सभी का कड़ा विरोध किया और अपनी रचनाओं के माध्यम से उन पर तीख प्रहार किया। कबीर ने निर्गुण-निराकार भक्ति के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति का संदेश दिया।

रचनाएँ—कबीर की समस्त रचनाओं का संग्रह उनके शिष्यों ने 'बीजक' नाम से किया था।

कबीर की साखियाँ

‘साखी’ शब्द ‘साक्षी’ से बना है। कवि ईश्वर को साक्षी मानकर जो कहता है वही साखी है। साखियाँ दोहा छंद में लिखी गई हैं। इन साखियों में प्रेम, भक्ति, ज्ञान और जीवनोपयोगी शिक्षाओं का समावेश है।



कबीर का साखियाँ

जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥१॥

अर्थात् कबीरदास जी कहते हैं जिस प्रकार युद्ध में तलवार काम आती है म्यान नहीं उसी प्रकार साधू जनों के ज्ञान को महत्व देना चाहिए न कि जाति को । हमें ऊपरी सुंदरता के स्थान पर भीतरी गुणवत्ता को महत्व देना चाहिए ।

आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक ।

कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक ॥२॥

○ अर्थात् कवि कहते हैं कि हमें अशिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए । यदि हम किसी व्यक्ति के प्रति दुर्व्यवहार करते हुए अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करते हैं तो वह पलटकर हमें ही हानि पहुँचाते हैं ।



माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि ।
मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं ॥३॥

कवि ईश्वर भक्ति का उचित मार्ग दिखाते हुए कहता है कि हाथ में माला फेरने से प्रभु का सच्चा स्मरण तब तक नहीं हो सकता जब तक हम अपनी वाणी और मन पर संयम नहीं रखते ।



कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ ।।४।।



- कवि कहता है कि हमें किसी भी वस्तु को छोटा नहीं समझना चाहिए । पाँव तले कुचली जाने वाली घास भी जब आँख में पड़ जाती है तो कठिन समस्या उत्पन्न कर सकती है ।